www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16
सृष्टि संवत् 1960853117
विक्रम संवत् 2073
दयानन्दाब्द 193

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org
दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर
विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 13 अंक : 29 रोहतक, 28 दिसम्बर, 2016 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

स्वामी श्रद्धानन्द जी को उनके बलिदान दिवस पर नमन

❑ मनमोहन कुमार आर्य

23 दिसम्बर, 2016 को ऋषिभक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी का 90वां बलिदान दिवस था। इसी दिन दिल्ली में उनको एक विधर्मी आततायी एवं जुनूनी हत्यारे अब्दुल रसीद ने रुग्णावस्था में गोली मारकर उनको शहीद कर दिया था। हमारे देश के इतिहास में हमारे देश के हिन्दू बन्धुओं को विदेशी यवनों ने देश पर आक्रमण कर यहां के लोगों को मारा, काटा व पीटा, बहिनों व माताओं की इज्जत से खिलवाड़ किया, हमें गुलाम बनाया और हमें जजिया कर तक देना पड़ा। अनेकानेक और भी अन्याय व उत्पीड़न झेलना पड़ा। इन विदेशी आततायियों के जुल्मों की असंख्य कहानियां हैं। यह सिलसिला शताब्दियों तक चला। उसके बाद अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बनाया और भारत की जनता पर अमानुषिक अत्याचार किये साथ ही भोले-भाले लोगों का धर्मान्तरण भी किया। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने जन्म लेकर जनजागरण करते हुए वैदिक धर्म व संस्कृति का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत किया और उसका प्राणपण से प्रचार किया। ईश्वर ने महर्षि दयानन्द को गजब की बुद्धि व ज्ञान दिया था। समाज-सुधार, अज्ञान तथा अन्धविश्वास दूर करने की प्रेरणा भी उन्हें अपनी आत्मा और अपने विद्या गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से मिली थी। स्वामी दयानन्द ने चुनौती देते हुए घोषणा की थी कि वेद ही वस्तुतः संसार की समस्त मानव जाति का एकमात्र धर्मग्रन्थ है। वेदानुकुल मान्यतायें व सिद्धान्त ही ईश्वर प्रदत्त होने से उन्हें स्वीकार थे और वेद विरुद्ध सभी मान्यताओं व सिद्धान्तओं का वह प्रमाणों, युक्तियों व तर्कों से खण्डन करते थे। उनके समय में संसार का कोई वेदेतर विद्वान उनकी किसी मान्यता का युक्ति व प्रमाण के साथ खण्डन नहीं कर सका। स्वामी दयानन्द के वेद प्रचार के कार्य के कारण ही 30

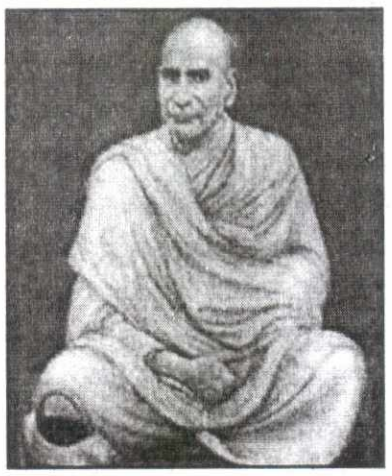

अक्तूबर, 1883 ई. को उनके विरोधी शत्रुओं द्वारा धोखे से विषपान द्वारा उनकी मृत्यु के बाद उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने उनके कार्यों को कुशलता व योग्यतापूर्वक निभाया। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वामी दयानन्द की वेदों की शिक्षाओं और सिद्धान्तों पर आधारित गुरुकुलीय शिक्षा का उद्धार किया। उन्होंने सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी जहां वेदों के अनेकानेक विद्वान बनें जिन्होंने शिक्षा, अध्यापन, पत्रकारिता, स्वतन्त्रता आन्दोलन, इतिहास, धर्मप्रचार, शुद्धि, जन्मना जाति के विरोध में प्रचार व दलितोत्थान आदि कार्यों सहित अनेकानेक समाज-सुधार के कार्य किये और वैदिक धर्म का प्रचार कर भारत का गौरवमय इतिहास रचा है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह वैदिक धर्म व संस्कृति के अनुरागी महापुरुष थे। आदर्श ईश्वर भक्त, वेदभक्त, देशभक्त, मानवता के पुजारी, शिक्षाशास्त्री, समाज-सुधारक और वेद धर्म प्रचार सहित स्वामी श्रद्धानन्द स्वतन्त्रता आन्दोलन के शीर्ष नेता और दलितों के मसीहा थे। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी व अन्य गुरुकुल आज भी वैदिक धर्म व संस्कृति के उत्थान में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। स्वामी जी ने देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रोलेट एक्ट के विरोध में सन् 1919 में उन्होंने दिल्ली में अंग्रेज सरकार के विरोध में आन्दोलन के नेतृत्व की बागडोर अपने हाथों में ली थी और उसे सफल किया था। जिस आन्दोलन का उन्होंने नेतृत्व किया था, उसके जलूस के चांदनी चौक आने पर अंग्रेजों के गुरखा सैनिकों ने अपनी बन्दूकें व संगीनें तान दी थी। तभी भीड़ को चीरकर स्वामी श्रद्धानन्द जी सैनिकों के सामने आये थे और सीना खोलकर सैनिकों को ललकारते हुए बोले थे, **'हिम्मत है तो मेरे सीने पर मारो गोली'**। स्वामी जी की यह ललकार, उनकी वीरता, निर्भयता, निडरता व साहस को देखकर वहां तैनात अंग्रेज अधिकारी घबरा गया था और उसने सैनिकों को बन्दूकें नीचे करने का आदेश दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की यदि अन्य घटनाओं को छोड़ भी दिया जाये तो यही घटना उन्हें महान् बनाने के लिए काफी है। इससे जुड़ी घटना यह भी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की वीरता की यह खबर पूरी दिल्ली और देश भर में फैल गई थी। इससे प्रभावित होकर दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से उन्हें मुस्लिमों की एक सभा को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। स्वामी जी ने वहां पहुंच कर भी एक इतिहास की रचना की। उन्होंने जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद मन्त्र **'ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथः। अधा ते सुम्नी महे।।'** बोलकर अपना सम्बोधन आरम्भ किया था और भारी मुस्लिम जनसमूह में उनकी जय जयकार हुई थी। उसके बाद यह सम्मान किसी गैर मुस्लिम व्यक्ति को कभी नहीं मिला कि वह जामा मस्जिद के मिम्बर से सम्बोधित कर सके। प्रत्यक्ष दर्शियों व समकालीन लोगों ने लिखा हैं कि चांदनी चौक की घटना से स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली के बेताज बादशाह बन गये थे। बताते हैं कि स्वामी जी ने जामा मस्जिद से अपने सम्बोधन में कहा था कि हिन्दी का हम शब्द 'ह' से हिन्दू व 'म' से मुसलमान को दर्शाता है और यह शब्द दोनों समुदायों की एकता का प्रतीक है।

देश की स्वतन्त्रता के इतिहास में अमृतसर में 13 अप्रैल, सन 1919 की बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग की नरसंहार की घटना प्रसिद्ध है जिसमें शान्तिपूर्ण सभा कर रहे हजारों स्त्री व पुरुषों को बिना चेतावनी दिए गोलियों से भून दिया गया था। गोली चलाने का आदेश ब्रिगेडियर जनरल रेजीनाल्ड डायर ने दिया था। इस गोलीकाण्ड में लगभग 1500 लोग मरे थे और 1200 से अधिक घायल हुए थे। इसके विरोध में चेन्नई में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया था। इसके लिए कोई उपयुक्त नेता न मिलने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी को ही अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनाया गया था। इसकी एक विशेषता यह थी कि यहां स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में दिया था। इस घटना से स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस के

क्रमशः पृष्ठ 7 पर.....

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय....✍

ऋषि ऋण को चुकाना है, आर्य राष्ट्र बनाना है..!

❑ आचार्य योगेन्द्र आर्य, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा अपने स्थापना काल से ही ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों व उनकी शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार में सम्पूर्ण भारत में अग्रणी रही है। ऋषि अपने जीवनकाल में प्रचार में केवल एक बार रेवाड़ी में पधारे थे। उसके बाद वे अपने जीवन में प्रचार या अन्य कारणों से वर्तमान हरयाणा में कभी नहीं पधारे। परन्तु आज सम्पूर्ण भारत में अगर कहीं आज आर्यसमाज का सबसे ज्यादा प्रचार-प्रसार है तो वह एकमात्र हरयाणा है। आज हरयाणा में आर्यसमाज के नाम को बच्चा-बच्चा जानता है इसका श्रेय आर्यसमाज के साधु-संन्यासियों के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ही जाता है जिसके अथक प्रयास के कारण आर्यसमाज हरयाणा में आज एक अग्रणी भूमिका में खड़ा है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए गांव-गांव, घर-घर जाकर ऋषि के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया समाज में फैली विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आन्दोलन चलाए जो ऋषि का आदेश था। उनमें से हिन्दी रक्षा आन्दोलन भी एक था जिसका जिम्मा ऋषिवर ने अपने आर्यों को दिया था कि हिन्दी ही वर्तमान भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

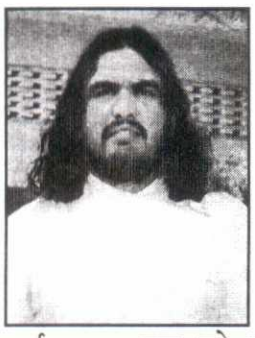

पठन-पाठन में संस्कृत एवं व्यवहार में गुजराती होने के बावजूद ऋषिवर ने अपना अधिकतम साहित्य हिन्दी भाषा में लिखकर यह प्रमाणित भी कर दिया कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। इसी हिन्दी रक्षा आन्दोलन के कारण ही हरियाणा का जन्म हुआ। संस्कृत भाषा को हरियाणा के विद्यालयों में पढ़ाये जाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्कालीन प्रधान पूज्य आचार्य श्री बलदेव जी महाराज के नेतृत्व में सरकार के खिलाफ आन्दोलन चलाया गया जिसके परिणाम स्वरूप संस्कृत को हरयाणा में बचाया जा सका जिसे सरकार ने समाप्त प्राय: बना दिया था। आर्यसमाज का एक मुख्य कार्य पाखण्ड-खण्डन, जो ऋषि जी ने प्रारम्भ किया था उसी कार्य को ऋषि अनुचर आचार्य श्री बलदेव जी के नेतृत्व में सभा सभा ने एक गुरुडम व पाखण्ड के अड्डे का विनाश किया। गुरुडम और पाखण्ड का केन्द्र करौंथा (रोहतक) से पाखण्डी रामपालदास को भगाया और इसके बाद बरवाला (हिसार) से जेल तक जो उस जैसे देशद्रोही एवं पाखण्डी का वास्तविक घर होता है, पहुँचा दिया।

गत तीन वर्ष के अपने कार्यकाल में सभा ने बहुत ही आघात झेलते हुए भी जिसमें एक बार तो कुछ दंगाइयों ने सभा पर कब्जा भी कर लिया था। अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए खाली करवा लिया जिसमें सभा के वर्तमान अधिकारियों की विशेष भूमिका रही, क्योंकि सभा केवल भवनों का नाम नहीं होती। विपरीत परिस्थितियों में जिसमें कार्य करने के लिए कार्यालय भी न बचा हो। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने गत तीन वर्ष के कार्यकाल में ऋषिवर के सपने वेदप्रचार को समस्त हरयाणा में एक विशेष दिशा प्रदान की। सभा ने एक विशेष प्रयोग करते हुए एक ऐसा वेदप्रचार रथ बनवाया जिसमें प्रचार के सभी साधन उपलब्ध हैं। प्रचार करवाने वाले को कुछ भी तैयारी करने की आवश्यकता नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ कि वेदप्रचार की पूरे हरयाणा में धूम मच गई। जहां आर्यसमाज के कार्यक्रम में 20-30 लोग ही आते थे अब हजारों की संख्या में आने लगे। अल्पकाल में ही हरयाणा के लगभग प्रत्येक जिलों में वेदप्रचार हुआ। कुछ जिले जैसे- पानीपत, कुरुक्षेत्र, जीन्द आदि के तो प्रत्येक गांव में वेदप्रचार किया गया। रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, भिवानी, सोनीपत, झज्जर, कैथल, हिसार, सिरसा इत्यादि जिलों में 20 से 50 गांवों में वेदप्रचार हुआ और ऋषि दयानन्द का सन्देश पहुँचा। वेदप्रचार का मुख्य भार आचार्य कर्मवीर मेधार्थी, मा० रामपाल आर्य, आचार्य विजयपाल, आचार्य रामदयाल आदि के कन्धों पर रहा। कई जिलों जैसे भिवानी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, हिसार आदि जिलों में मैं भी गया। भजन मण्डली के रूप में कुलदीप आर्य, महेन्द्र आर्य, तेजवीर आर्य, सत्यपाल आर्य, सत्यपाल आर्य रहे, जिन्होंने आर्यजनता को अपनु सुमधुर एवं जीवनोपयोगी भजनों के द्वारा मन्त्रमुग्ध करते हुए ऋषि का सन्देश सुनाया जिसे जनता ने हाथों लिया।

वेदप्रचार के लिए कई जिलों में मेरा भी जाना हुआ। वेदप्रचार करते हुए यह ज्ञान हुआ कि जनता को वेदज्ञान रूपी ईश्वरीय वाणी की कितनी ज्यादा आवश्यकता है। आज समाज में ईश्वर को लेकर अनेक भ्रांतियां फैली हुई हैं। परमपिता परमात्मा के सच्चे निराकार स्वरूप की जगह मूर्तिपूजा, ढोंग, पाखण्ड ने ले रखी है। कुछ स्वयंसिद्ध लोग स्वयं परमात्मा के प्रतिनिधि Messanger of God बने हुए और कुछ तो स्वयं ही भगवान् का अवतार बन गए हैं। अपने भौतिक सांसारिक सुखों एवं स्वार्थों की पूर्ति के लिए भोली जनता को चारों ओर से चूस रहे हैं। भोली जनता का सारा आर्थिक, सामाजिक एवं मानसिक सामर्थ्य उन दोषी, पाखण्डी और तथाकथित धर्मगुरुओं के झूठे दम्भ पूर्ति और उनके ऐशोआराम के साधनों को इकट्ठा करने में जाया हो रहा है।

जनता जातिवाद, भाई-भतीजा वाद और अंधविश्वास की बेड़ियों में इस प्रकार जकड़ी हुई है जैसे यही उनकी शास्वत स्थिति हो। आर्यसमाज के अतिरिक्त ऐसा कोई संगठन मुझे प्रतीत नहीं होता और न हो सकता जो इन सबके खिलाफ खड़ा होकर आवाज उठाने की सोच भी सकता हो। केवल मात्र आर्यसमाज ही ऐसा संगठन है, एक आशा की किरण है, डूबते को तिनके का सहारा है, जो एक बार विचार कर ले, ठान ले कि मुझे अपने व्यक्तिगत स्वार्थ, दूसरे के दोष दर्शन इत्यादि दोषों से परे होकर, इस संसार को परमपिता परमात्मा के ज्ञान वेदमाता के सन्देश से परिपूर्ण कर देना है तो समस्त संसार की सारी आसुरी शक्तियां मिलकर भी इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। इन्हीं विचारों को ध्यान में रखते हुए और आर्यजनता ने जो हमें जिम्मेवारी सौंपी है उन सबका धन्यवाद, कृतज्ञता प्रकट करते हुए आर्यजनता को यह आश्वासन देना चाहता हूं कि जिस शक्ति से पिछले तीन वर्षों में जो सभा ने कार्य किया है उससे भी अधिक जोश और अधिक होश से, ऋषि दयानन्द जी के सन्देश को, वेदमाता के ज्ञान को हरयाणा में ही नहीं, पूरे देश में एवं संसार में फैलायेंगे।

आने वाले समय में वेदप्रचार के कार्य को और अधिक गति से किया जाएगा। जगह-जगह आर्यसमाज के सिद्धान्तों को सिखाने के लिए शिविरों का आयोजन किया जाएगा। वेदप्रचार रथ एक सशक्त साधन है और वेदप्रचार रथ बनवाकर वेदप्रचार में लगायेंगे। आर्य वीर दल के शिविरों के माध्यम से नवयुवकों को जोड़ने के कार्य को गति प्रदान करेंगे। साहित्य भी वेदप्रचार का एक अटूट साधन है। कोशिश रहेगी कि प्रत्येक व्यक्ति तक आर्यसमाज का साहित्य पहुँचे। यह सब कार्य आप सब के सहयोग के बिना सभा अकेले नहीं कर सकती। मैं आर्यजनता से करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि इस पावन कार्य में सभा का सहयोग करें ताकि हम सब ऋषि ऋण से अनृण हो सकें। सभा ऋषि दयानन्द के सन्देश को हरयाणा के प्रति व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए कृतसंकल्प है। परमपिता परमात्मा की कृपा और आशीर्वाद तो हमेशा धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों में होता ही है।

यां मेधां देवगणा: पितरश्चोपासते०

ईश्वर हमें ऐसी बुद्धि, प्रेरणा एवं सामर्थ्य प्रदान करे जिससे ओतप्रोत हमारे पूर्वज ऋषि थे। हम व्यक्तिगत बुराइयों से छूटकर उच्च आध्यात्मिक योग्यता प्राप्त करते हुए समस्त संसार को आर्य बना सकें जो देव दयानन्द का सपना था और वेद भगवान् का आदेश है—**'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।'**

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क–01262-216222, मो० 08901387993

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द : एक अनुपम व्यक्तित्व

❑ सहदेव समर्पित, सम्पादक शांतिधर्मी (9416253826)

मृतप्राय: हिन्दू जाति की रगों में नये रक्त का संचार करने वाले, अपनी सिंह-गर्जना से देश और धर्म के दुश्मनों को कंपा देने वाले, स्वामी दयानन्द के अद्वितीय शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन और बलिदान- दोनों ही अप्रतिम हैं। जिन्होंने मोहनदास कर्मचन्द गांधी को पहली बार 'महात्मा' का संबोधन दिया। विश्व के इतिहास में पहली बार किसी आर्य संन्यासी ने वेदमंत्र से प्रारम्भ करके जामा मस्जिद के मिम्बर से व्याख्यान दिया, वे स्वामी श्रद्धानन्द जी ही थे। तात्कालीन राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र के धुरन्धर जिनके आगे अपना सिर झुकाने में गौरव समझते थे। महात्मा गांधी जिनको 'बड़ा भाई' कहकर संबोधित करते थे। मौलाना मोहम्मद अली ने जिनके बारे में कहा- 'गोरखों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल देने वाले उस बहादुर देशप्रेमी का चित्र अपनी नजर के सामने रखना मुझे बहुत अच्छा लगता है।' पं0 मदनमोहन मालवीय ने उनके बलिदान पर कहा- 'उनकी ऐसी मृत्यु हिन्दु धर्म के मृत शरीर में प्राण फूंकने जैसी है। हमारे प्रधान नेता ने धर्म की खातिर अपने प्राण दिये हैं।' महात्मा गांधी ने लिखा- 'स्वामीजी वीरों में अग्रणी थे। उन्होंने अपनी वीरता से भारत को आश्चर्यचकित किया था। उन्होंने अपनी देह को भारतवर्ष के लिए कुर्बान करने की प्रतिज्ञा ली थी-- स्वामीजी ने अछूतों के लिए जो कुछ किया उससे अधिक भारतवर्ष में किसी और पुरुष ने नहीं किया।' गणेशशंकर विद्यार्थी ने स्वामी जी के बलिदान पर कहा-' धर्म, देश और हिन्दू जाति के लिए उन्होंने जो कुछ किया, आगामी संतति उसके आगे श्रद्धा के साथ सिर झुकावेगी।' सरदार वल्लभ भाई पटेल कह उठे-'उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहेगा।' पं0 हरिशंकर शर्मा के शब्दों में-

जिये तो जान लड़ाते रहे वतन के लिए।
मरे तो हो गए कुर्बान संगठन के लिए।।

स्वामी श्रद्धानन्द के विषय में कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के उद्धरण इसलिए दिये गए हैं ताकि पाठकों को स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्त्व के कद का अनुमान हो सके। 30 मार्च 1919 को दिल्ली में रोलेक्ट एक्ट के विरोध में होने वाले प्रदर्शन का नेतृत्त्व महात्मा गांधी को करना था, महात्माजी को दिल्ली आते हुए पलवल के स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द दिल्ली के हिन्दू मुसलमानों के एकछत्र नेता थे। स्वामीजी के नेतृत्त्व में जब हजारों प्रदर्शनकारियों की भीड़ चांदनी चौक के पास पहुंची तो पुलिस ने रास्ता रोक लिया। गोरखे सैनिकों ने अपनी पोजिशन ले ली। ऐसी स्थिति में यदि स्वामी श्रद्धानन्द उस भीड़ के नेता न होते तो संभवत: जलियावाला काण्ड 14 दिन पहले दिल्ली में ही हो गया होता। एक पल की चूक हजारों लोगों की मौत का कारण बन सकती थी। स्वामी श्रद्धानन्द ने पहले तो कहा था- 'यदि आपकी ओर से कोई गड़बड़ न हुई तो पूरी भीड़ को संयमित रखने की जिम्मेवारी मैं लेता हूँ।' जब गोरखे नरसंहार करने पर उतारू हो गए तो श्रद्धानन्द अपना सीना खोलकर आगे बढ़े- शांत निस्तब्ध वातावरण में उनकी धीर गंभीर ध्वनि गूंजी-'निहत्थी जनता पर गोली चलाने से क्या लाभ? मेरी छाती खुली है। हिम्मत है तो गोली चलाओ।' कुछ क्षण तक संन्यासी की छाती और गोरखों की संगीनों का सामना होता रहा। भीड़ सांस रोके खड़ी थी। अचानक एक गोरे अधिकारी ने स्थिति की नाजुकता को समझा, और गोरखों को पीछे हटने का आदेश दिया। एक भयंकर नरसंहार होते होते रह गया पर-- देशभक्तों के हृदयों में संन्यासी की निर्भीकता और वीरता की धाक जम गई।

व्यक्ति के जीवन में प्रेरणा का क्या स्थान होता है! वह अपने आपको किसी प्रेरणा के द्वारा कितना बदल सकता है यह विचारणीय प्रश्न है। स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आने वाले कितने ही व्यक्तियों में कितने ही ऐसे हैं जिनमें आमूलचूल परिवर्तन हो गया। यह स्वामी दयानन्द के चुम्बकीय व्यक्तित्त्व का प्रभाव था या उस व्यक्ति के अन्तरात्मा की शुद्धता- हो सकता है इस विषय पर हम और आप तुरन्त किसी निर्णय पर न पहुंच पाएँ पर श्रद्धानन्द के जीवन का परिवर्तन हमारे लिए सदा प्रेरक बना रहेगा, इसमे कोई संशय नहीं है।

फरवरी सन 1856 में जालंधर के तलवन ग्राम में एक समृद्ध क्षत्रिय परिवार में जन्म लेने वाले पुलिस के बड़े अधिकारी नानकचन्द का पुत्र- पतन की सारी सुविधाओं और परिस्थितियों को अनायास ही प्राप्त करता है। उसे कोई रोकने वाला नहीं है। लेकिन यह भी वह बिना विचार के नहीं करता। वह उस युग के अन्य पढ़े लिखे नौजवानों की तरह पाश्चात्य विचारों के आगे परम्परा को हेय समझने लगता है।

संवत् 1936 में बांसबरेली में स्वामी दयानन्द पधारे। पिता के आग्रह पर श्रद्धानन्द (तब मुंशीराम) व्याख्यान में चले तो गए पर मन में वही भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की क्या बात करेगा! स्वामी दयानन्द के भव्य व्यक्तित्त्व को देखकर श्रद्धा उत्पन्न हुई। उनके व्याख्यान में पादरी टी0 जे0 स्काट व दो तीन अन्य गोरों को बैठे देखा तो श्रद्धा और बढ़ी। केवल 10 मिनट व्याख्यान सुना था कि दयानन्द के हो गए। उसके बाद तो जब तक स्वामी दयानन्द वहाँ रहे, व्याख्यान में पहुंचने वाले और दयानन्द को प्रणाम करने वाले पहले व्यक्ति मुंशीराम ही होते थे।

दयानन्द के दर्शन करता है तो वह हिल जाता है। दयानन्द से वार्ता करता है तो उसके विश्वास डगमगाने लगते हैं। तर्क वितर्क करता है तो उसे अब तक के अपने विचार खोखले और निर्बल मालूम होते हैं। ईश्वर पर विश्वास न करने वाला युवक इतना बदल जाता है कि उसका शेष जीवन केवल श्रद्धा को मूर्तिमन्त करने में व्यतीत होता है। एक समय वह जिन पाश्चात्य विचारकों के विचारों में निमग्न है तो एक समय ऐसा आता है कि जब वह मिशनरी स्कूल में पढ़ने वाली कन्या के मुख से 'ईसा ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल' सुनता है तो पंजाब की प्रथम कन्या पाठशाला स्थापित करने का संकल्प ले लेता है।

उसके बाद तो उनका जीवन अपना न रहा, दयानन्द का हो गया। नहीं नहीं-- परमेश्वर का हो गया। दयानन्द तो खुद अपने ही नहीं थे। वे तो परमेश्वर की आज्ञा में ही अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। श्रद्धानन्द ने भी वही राह पकड़ ली। कभी अपने लिए सोचने का अवसर मिला तो उनके हृदय से अपने जीवनदाता ऋषि के प्रति यही उद्गार निकले- 'ऋषिवर!-- मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त और कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की कायापलट की, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है! परमात्मा के सिवाय कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में व्याप्त कितने पापों को दग्ध कर दिया है? किन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से निकालकर सच्चा जीवन लाभ करने योग्य बनाया। नास्तिक रहते हुए भी वास्तविक आनन्द में निमग्न कर देना ऋषि आत्मा का ही काम था।'

मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार-'ऐसे युग में जब अन्य बाजारी चीजों की तरह विद्या बिकती है, यह स्वामी श्रद्धानन्द जी का ही दिमाग था कि उन्होंने प्राचीन गुरुकुल प्रथा में भारत के उद्धार का तत्त्व समझा।' ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धा को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने अपनी सम्पत्ति, कोठी, प्रिंटिंग प्रैस, अपने दोनों सुपुत्र और अपने जीवन तक का बलिदान कर दिया। उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार केवल भाषणों और लेखों के माध्यम से ही नहीं किया बल्कि उसको व्यावहारिक रूप दिया। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन का उच्च स्तर तक नेतृत्त्व किया। जलियांवाला काण्ड के बाद जब अमृतसर कांगेस अधिवेशन पर खतरे के बादल मंडरा रहे थे तो स्वामीजी ने आगे बढ़कर स्वागताध्यक्ष के रूप में उसका सफल आयोजन कर दिखाया। बहुत कम लोग जानते हैं कि कांग्रेस के कार्यक्रम में दलितोद्धार को प्रमुख स्थान दिलाने का काम स्वामी श्रद्धानन्द ने ही किया था। यह वह समय था जब नेता लोग दलितों को एक जड़ सम्पत्ति समझते थे। मौलाना मुहम्मद अली ने तो दलितों को हिन्दू और मुसलमानों में आधे आधे बांट लेने का सुझाव कांग्रेस के मंच से दे डाला था। स्वामी श्रद्धानन्द दलितों को हिन्दू जाति का अंग समझते थे। जब उन्हें लगा कि कांग्रेस दलितों के मामले में और मुस्लिमों के मामले में किसी और ही राह पर चल रही है तो उन्होंने कांग्रेस को छोड़ दिया। रहतियों और मलकानों की शुद्धि कर के उन्होंने निराश और हताश हिन्दू जाति में नए प्राणों का संचार कर दिया।

महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि पशु में और मनुष्य में क्या अन्तर होता है- 'जितने मनुष्य से भिन्न जातिस्थ प्राणी हैं, उनमें दो प्रकार का स्वभाव है- बलवान से डरना, निर्बल को डराना और पीड़ा कर अर्थात् दूसरे का प्राण तक निकाल के अपना मतलब साध लेना

क्रमशः पृष्ठ 6 पर.....

www.thearyasamaj.org

स्वास्थ्य-चर्चा... जल चिकित्सा : एक चमत्कार

❑ आयुर्वेदशिरोमणि डॉ. मनोहरदास अग्रावत एन.डी.

जल शरीर की समस्त जैविक क्रियाओं के लिए प्रत्यक्षत: जिम्मेवार होता है, जीवन के लिए जरूरी आधारभूत पोषक तत्त्वों का वाहक भी जल ही होता है, इतना ही नहीं जल शरीर के तापमान को नियंत्रित रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

प्राकृतिक चिकित्सा पूर्णत: भारतीय चिकित्सा पद्धति है, इसमें वायु, जल, मिट्टी तथा धूप के माध्यम से रोगों का उपचार किया जाता है। इसकी उपयोगिता को देखकर वैदेशिक विद्वानों ने इसे खूब अपनाया। यूनान, अरब, जर्मनी, इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि देशों में इसका खूब प्रचार-प्रसार भी हुआ परन्तु लुईकुने के आविर्भाव से पूर्व प्राकृतिक चिकित्सा जिसका प्रमुख अंग जल चिकित्सा है का वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित विकास नहीं हो पाया था। लुईकुने जर्मनी के नागरिक थे और उन्होंने 10 अक्तूबर 1983 में अपने नेचर क्योर (प्राकृतिक चिकित्सालय) खोल दिया था। उन्होंने जल-चिकित्सा पर विशेष जोर दिया। स्नान की विभिन्न विधियां-भाप स्नान, मेहन स्नान आदि खोज निकाली और आगे फिर उसका विस्तार होता गया।

प्रकृति में वायु के बाद जल का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। पृथ्वी पर 3/4 भाग जल एवं केवल 1/4 भाग थल (जमीन) है। प्राकृतिक चिकित्सा विधि में जल का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है। हमारी शारीरिक रचना में भी जल की विपुलता है। शरीर के वजन का 2/3 भाग जल एवं सिर्फ 1/3 भाग ठोस है। दांत को शरीर का सबसे ठोस पदार्थ कहा जा सकता है। इसमें 10 प्रतिशत जल का अंश है, शरीर के अन्य भाग की हड्डियों में 18 प्रतिशत से अधिक जलीय अंश रहता है। मनुष्य की आयु वृद्धि के साथ-साथ शरीर के जलीय अंश में किंचित् कमी एवं ठोस अंश में थोड़ी वृद्धि होने लगती है। बच्चों तथा जवानों में ठोस की अपेक्षा जलीय अंश अधिक होता है।

हमारी दैनिक खुराक में जिसको हम ठोस वस्तु मानते हैं, उसमें भी 50 से 60 प्रतिशत जलांश रहता है। इसके अतिरिक्त जल या अन्य पेय के रूप में शरीर को जल की आवश्यकता रहती है। इस प्रकार शरीर में जल की विपुलता के कारण दैनिक आहार, स्नान तथा स्वच्छता आदि में जल का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है।

जलोपचार (जल धौती, एनिमा, वाष्प-स्नान, जल की पट्टियां, लपेट तथा स्नानादि) द्वारा निम्नलिखित हेतु सिद्ध किए जाते हैं—

1. आमाशय साफ करना।
2. बड़ी आंत, मलाशय आदि से मल निकालकर उसको साफ करना।
3. अधिक जल पीकर मूत्राशय मार्ग से जल निकालकर उसको स्वस्थ करना।
4. शरीर के अंगों को तथा त्वचा को साफ करना, चर्म छिद्र (रोम छिद्र) खुले एवं साफ रखना, जिससे रक्त के विजातीय द्रव्य आसानी से बाहर निकल सकें।
5. बुखार की अवस्था में बढ़े हुए शारीरिक ताप को कम करना एवं ठण्ड लगने पर उसमें उष्णता पैदा करना।
6. सब अंग-प्रत्यंगों में रक्ताभिसरण प्रमाण में रखना एवं रक्ताभिसरण क्रिया में आवश्यक वृद्धि करना।
7. आकस्मिक चोट या अन्य कारणों से एक ही स्थान में अधिक रक्त संचित होने पर वहां पर भार तथा वेदना कम करना।

जल भी एक दवा है

हमारे शास्त्रों में लिखा है—**अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे-वारि बलप्रदम्।** अर्थात् अजीर्ण में जल दवा का काम करता है और भोजन पचने के बाद जल पीने से शरीर को बल प्रदान करता है। ठण्डे और गरम जल में अलग-अलग औषधीय गुण होते हैं। कई रोगों में ठण्डा जल और कई रोगों में गरम जल दवा का काम करता है। यदि धूप में निकलने से पहले पानी पी लिया जाए तो लू कभी नहीं लगती। लू शरीर में पानी के अभाव के समय लगती है। बाहर देर तक रहना पड़े तो बीच में अवश्य ही पानी पीना चाहिए।

आग से झुलसने पर जले अंगों को ठण्डे जल में कम से कम एक घण्टा डुबोकर रखना चाहिए। इससे शान्ति मिलेगी, जलन दूर होगी और घाव या फफोला नहीं होगा। यदि पूरा शरीर जल जाए तो तुरन्त उसे बड़े जल के हौज या तालाब में डुबो दें, सांस लेने के लिए नाक को जल से बाहर रखें। यह याद रखें कि झुलसा अंग जल में एक या दो घण्टे डुबा रहे। उस पर पानी नहीं छिड़कना चाहिए, इससे हानि होती है। इसी तरह हाथ या पैर में मोच आ जाने पर या चोट लगने पर तुरन्त उस स्थान पर ठण्डे जल की पट्टी लगा देनी चाहिए। चोट या मोच के स्थान पर बर्फ भी लगा सकते हैं। इससे न तो सूजन होगी न तो दर्द बढ़ेगा। अगर गर्म जल की पट्टी लगायेंगे या सेंक करेंगे तो सूजन आ जायेगी और दर्द बढ़ जायेगा।

क्रमश: अगले अंक में....

जीवनोपयोगी

1. सुबह उठ कर कैसा पानी पीना चाहिए-हल्का गर्म।
2. पानी पीने का क्या तरीका होता है-सिप-सिप करके व नीचे बैठकर।
3. खाना कितनी बार चबाना चाहिए-32 बार।
4. पेट भर कर खाना कब खाना चाहिए-सुबह
5. सुबह का नाश्ता कब तक खा लेना चाहिए-सूरज निकलने के ढाई घण्टे तक।
6. सुबह खाने के साथ क्या पीना चाहिए-जूस।
7. दोपहर को खाने के साथ क्या पीना चाहिए-लस्सी/छाछ।
8. रात को खाने के साथ क्या पीना चाहिए-दूध।
9. खट्टे फल किस समय नही खाने चाहिए-रात को।
10. आईसक्रीम कब खानी चाहिए-कभी नहीं
11. फ्रिज़ से निकाली हुई चीज कितनी देर बाद खानी चाहिए-1 घण्टे बाद।
12. क्या कोल्ड ड्रिंक पीना चाहिए-नहीं।
13. बना हुआ खाना कितनी देर बाद तक खा लेना चाहिए-40 मिनट।
14. रात को कितना खाना खाना चाहिए-न के बराबर।
15. रात का खाना किस समय कर लेना चाहिए-सूरज छिपने से पहले।
16. पानी खाना खाने से कितने समय पहले पी सकते हैं-48 मिनट।
17. क्या रात को लस्सी पी सकते हैं-नहीं।
18. सुबह खाने के बाद क्या करना चाहिए-काम।
19. दोपहर को खाना खाने के बाद क्या करना चाहिए-आराम।
20. रात को खाना खाने के बाद क्या करना चाहिए-500 कदम चलना चाहिए।
21. खाना खाने के बाद हमेशा क्या करना चाहिए-वज्रासन।
22. खाना खाने के बाद वज्रासन कितनी देर करना चाहिए-5 -10 मिनट।
23. सुबह उठकर आखों में क्या डालना चाहिए-मुंह की लार।
24. रात को किस समय तक सो जाना चाहिए-9-10 बजे तक।
25. तीन जहर के नाम बताओ-चीनी, मैदा, सफेद नमक।
26. दोपहर को सब्जी मे क्या डाल कर खाना चाहिए-अजवायन।
27. क्या रात को सलाद खानी चाहिए-नहीं।
28. खाना हमेशा कैसे खाना चाहिए-नीचे बैठकर व खूब चबाकर।
29. चाय कब पीनी चाहिए-कभी नहीं।
30. दूध मे क्या डाल कर पीना चाहिए-हल्दी।
31. दूध में हल्दी डालकर क्यों पीनी चाहिए-कैंसर ना हो इसलिए।
32. कौन सी चिकित्सा पद्धति ठीक है-आयुर्वेद।
33. सोने के बर्तन का पानी कब पीना चाहिए-अक्टूबर से मार्च (सर्दियों में)।
34. ताम्बे के बर्तन का पानी कब पीना चाहिए-जून से सितम्बर(वर्षा ऋतु)।
35. मिट्टी के घड़े का पानी कब पीना चाहिए-मार्च से जून (गर्मियों में)।
36. सुबह का पानी कितना पीना चाहिए-कम से कम 2-3 गिलास।
37. सुबह कब उठना चाहिए-सूरज निकलने से डेढ़ घण्टा पहले।

—मनजीत श्योराण, भिवानी

www.thearyasamaj.org

महात्मा मुंशीराम : जीवन बदल गया

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

उपदेश अनेक सुनते हैं, जीवन भी बदलते हैं, लेकिन अनेक प्रसंगों में बदलाव का ऊपरी आवरण तो ओढ़ लिया जाता है, परन्तु मन छल-कपट से दूषित रहता है। यदि बदलाव हो तो महात्मा मुंशीराम जैसा हो। बदलाव के प्रति यही उनकी श्रद्धा थी जो संन्यास आश्रम ग्रहण कर अपना नाम भी श्रद्धानन्द रख लिया। ऋषियों के सिद्धान्त 'अच्छा नाम व तदनुरूप काम' को सिद्ध कर दिखाया। ऋषि के इस मानस पुत्र का जीवन इतना बदल गया कि चारित्रिक पतन से ऊपर उठकर यही जीवन सदाचार की प्रतिमूर्ति बनकर सदाचार का सफल पाठ पढ़ाने लगा।

इसी सन्दर्भ में एक घटना उस समय के दिल्ली के प्रसिद्ध दानी सेठ श्री रग्घूमल लोहिया ने इनके सुपुत्र पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति को बताई थी। सेठ जी ने बताया कि दिल्ली के चावड़ी बाजार में उनकी जायदाद व दुकान थी। आर्यसमाज समीप होने के कारण ये यदा-कदा वहां सत्संग में जाता था। एक बार इन सेठ जी को पता चला कि साप्ताहिक सत्संग में गुरुकुल कांगड़ी से महात्मा मुंशीराम जी आ रहे हैं। ये उनका उपदेश सुनने गये। महात्मा जी का उपदेश सदाचार पर था। महात्मा जी ने कहा कि बड़े शोक की बात है कि जहां आर्यसमाज है, उसी के पास सेठ लोगों ने अपनी जायदाद में वेश्याएं किराए पर बिठा रखी हैं, जिसके कारण यह पूरा क्षेत्र दुराचार का अड्डा बना हुआ है। ऐसी पाप की कमाई कभी फल नहीं करती। महात्मा जी ने कहा कि मैं पूरा विश्वास दिलाता हूँ कि जो भी इस कमाई को छोड़ देगा उसका लाभ ही लाभ होगा वरन् उसकी संतान भी संस्कार विहीन हो जाएगी। सेठ जी ने जब महात्मा जी की यह बात सुनी तो उन्होंने वेश्याओं को निकाल दिया। उन्होंने बताया कि इसके बाद उनके व्यापार में बहुत लाभ हुआ। उन्होंने एक लाख रुपया दिल्ली में कन्या गुरुकुल के लिए व एक लाख गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिए व और भी बहुत सारा दान दिया। श्रद्धा से बदलाव लाने वाला व्यक्ति ही दूसरे का ऐसा परिवर्तन कर सकता है।

आओ संकल्प लेवें कि श्रद्धा से आर्यसमाज का कार्य करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	20-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	40-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	100-00
9.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
10.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
11.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
12.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
13.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
14.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
15.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
16.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
17.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
18.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00
19.	सत्यार्थप्रकाश (बड़ी)	—	150-00

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

दयानन्दमठ, रोहतक। आज दिनांक 23 दिसम्बर, 2016 को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के नवनिर्वाचित प्रधान मास्टर रामपाल आर्य, मन्त्री आचार्य योगेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष श्रीमती बहन सुमित्रा आर्या, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता आचार्य सर्वमित्र आर्य तथा अन्य पदाधिकारियों द्वारा पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन किया गया एवं स्वामी जी के जीवन व कार्यों की विस्तृत रूप से चर्चा की गई। तत्पश्चात् बहन दया आर्या, बहन सुमित्रा आर्या, बहन गायत्री आर्या, श्री राजकुमार आर्य, श्री जितेन्द्र शास्त्री आदि ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति मधुर भजन प्रस्तुत किया। इस पावन यज्ञ पर उपस्थित आज के प्रमुख व्यक्तियों में आचार्य अभय आर्य, आचार्य शम्भूमित्र, वैद्य श्री रमेश शास्त्री, श्री निगम मुनि जी, श्री कर्णसिंह मोर, श्री हवासिंह राठी, श्री वेदप्रकाश आर्य मंत्री आर्य वीर दल हरयाणा, श्री संदीप आर्य, श्री दिनेश आर्य महामन्त्री गोरक्षा दल हरयाणा, श्री रघुवीर काद्यान, श्री सुभाष सांगवान, श्री अनूप श्योराण, श्री राजेश ग्रेवाल, श्री बलराज आर्य, ब्र० नरेन्द्र आर्य, ब्र० राजेश आर्य सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इससे पहले प्रदेश के सभी शिक्षण संस्थाओं, आर्यसमाजों एवं सामाजिक संगठनों में अनेक पदाधिकारियों द्वारा पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया गया।

भाषण व गायन प्रतियोगिता में छाए गुरुकुल के ब्रह्मचारी

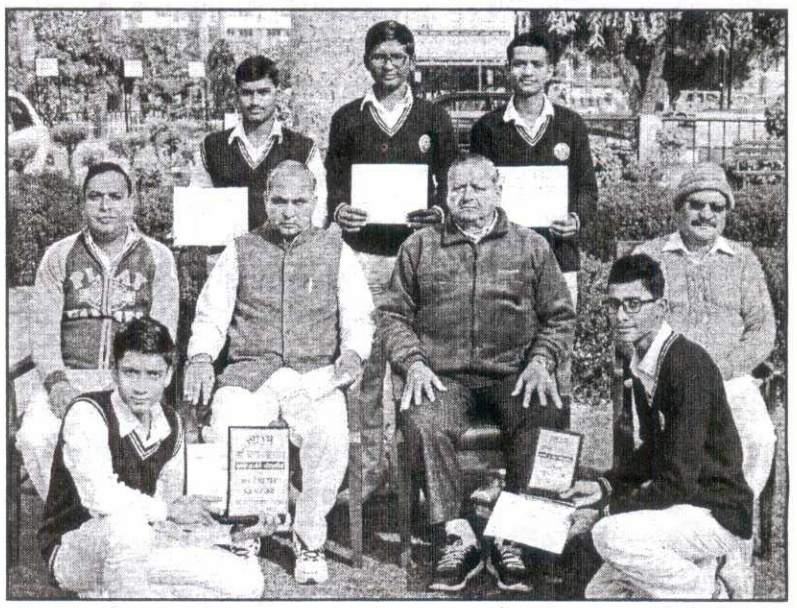

कुरुक्षेत्र, 24 दिसम्बर 2016 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों ने अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर आयोजित भाषण एवं गायन प्रतियोगिता में प्रथम एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। यह जानकारी देते हुए सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने बताया कि 23 दिसम्बर 2016 को पानीपत के आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें भाषण और गायन प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों की 10-10 टीमों ने भाग लिया।

भाषण प्रतियोगिता में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारी अनमोल आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया वहीं गीत-गायन प्रतियोगिता में गुरुकुल के ही ब्र. आदित्य प्रकाश व साथियों ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने सभी छात्रों, संगीत अध्यापक कमलेश पंत व हिन्दी अध्यापक सुखविन्द्रपाल को शुभकामनाएं व बधाई दीं।

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द : दलितोद्धार की वर्तमान में उपयोगिता

❑ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

अपने गौरवशाली इतिहास को पढ़ने का लाभ तभी है जब हम उससे सीख लेकर वर्तमान में उसकी उपयोगिता समझें। इतिहास की भूलों से सीख लें और संकल्प लें कि काठ की हांडी बार-बार आंच पर नहीं चढ़ेगी। यदि हम इतिहास से कुछ सीखते हैं, वर्तमान में उसको क्रियान्वित करते हैं तभी अपने भविष्य को उज्ज्वल कर पाते हैं। आर्यजगत् के महामानव देवदयानन्द के मानस पुत्र गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के पुन: स्थापक, शुद्धि आन्दोलन के प्रणेता, निर्भीक संन्यासी, प्रखर वक्ता, हिन्दीसेवी, दानवीर, दलितोद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सबक लेकर यदि वर्तमान संदर्भ में दलितोद्धार पर भी आर्यजाति कार्य प्रारम्भ कर दे तो निश्चित रूप से हम अपने समाज को उत्कर्ष की ओर ले जाने में समर्थ होंगे।

वर्तमान समय की समस्या को इतिहास के सभी परिप्रेक्ष्य में देखने से ही कुछ समाधान कर पायेंगे। वर्तमान समय में भी हमारा हिन्दू समाज जातपात के कबीलों में बंटा आपस में ही लड़ रहा है। विशेषरूप से तथाकथित सवर्ण अगड़ी जातियों विशेष रूप से खुद को मार्शल या लड़ाकी कहलाने वाली जातियां पिछड़ी दलित जातियों पर लगातार अत्याचार करती हैं। समाज में दलित जातियों को उनका उचित स्थान और सम्मान नहीं दिया जाता। आज भी कोई अगड़ी जाति दलितों के साथ सामान्य रूप से रोटी-बेटी का सम्बन्ध नहीं रखना चाहती। इस सामाजिक विद्वेष के ऐतिहासिक कारणों के साथ-साथ वर्तमान समय में जातिवादी नेताओं की भूमिका भी है। हमारे समाज को जातिवादी कबीलों में बांटकर आपस में लड़वाकर इस लोकतंत्र को भीड़तंत्र बनाकर हमें एक वोट की तरह प्रयोग करके येनकेन प्रकारेण सत्ता प्राप्ति इन जातिवादी नेताओं का स्वार्थ है। समाज में जातिवादी विद्वेष संघर्ष, आपसी झगड़ों में बृहत्तर हिन्दू समाज की हानि और इन जातिवादी नेताओं को सत्ता प्राप्ति का लाभ है।

अब इस वर्तमान समस्या को स्वामी श्रद्धानन्द के समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आलोक में देखकर इस समस्या का समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। उस समय ब्रिटिश राज में अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' की नीति कामयाब रही थी। वही नीति आजकल के जातिवादी नेता भी अपना रहे हैं। हम शायद तब भी यह नहीं समझते थे कि हमारे आपसी विद्वेष, संघर्ष और झगड़ों में किसका लाभ और स्वार्थ है और आज भी हम इस बात को नहीं समझ पा रहे। लेकिन उस समय भी दूरदर्शी महामानव स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने देव दयानन्द की आर्य मान्यताओं वैदिक सिद्धान्तों में इस जातिगत विद्वेष का हल खोजा था और दलितोद्धार की आवश्यकता को समझकर उस पर बल दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उस समय भी समझ लिया था कि यदि दलितों का उत्पीड़न बन्द नहीं हुआ, छुआछूत की समस्या बनी रही और तथाकथित अगड़ी सवर्ण जातियां इनको दोयम दर्जे का मानती रही तो यह दलित वर्ग अपना घर छोड़कर पराया हो जाएगा और इनका धर्मान्तरण या तो जबरन या फिर सेवा के नाम पर राज्य सत्ता के सहारे बहलाकर ईसा या मूसा के धर्मान्तरण का नुकसान अंतत: आर्य जाति होगा।

इसी हानि को भांपते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने 'शुद्धि आन्दोलन' चलाया और शुद्धि सभा की स्थापना करके शुद्धि समाचार के नाम से अखबार शुरू किया। उस समय शुद्धिकरण आन्दोलन अपने चरम पर था। स्वामी जी ने धर्मान्तरण रोकने और दलितों को उनका सम्मान दिलवाने के उद्देश्य से दलितोद्धार सभा की स्थापना वर्ष 1913 में की और वर्ष 1921 में स्वामी जी इसके अध्यक्ष बनाए गए। स्वामी जी ने शुद्धिकरण और दलितोद्धार के साथ ही दलितों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने का काम भी शुरू किया। वर्ष 1924 में अहमदाबाद में आयोजित होने वाले कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में महात्मा गांधी को तार से संदेश भेजा। स्वामी जी के लिए अछूतोद्धार की समस्या का सर्वाधिक महत्त्व था। नागपुर और बारडोली के अधिवेशनों में पारित प्रस्तावों में अस्पृश्यता निवारण की शर्त रखी गई। महात्मा गांधी तो स्वामी जी के विचार से सहमत थे। लेकिन गांधी जी के जेल जाने के बाद कांग्रेस के अन्य नेताओं ने अछूतोद्धार की समस्या से आंखें मूंद ली। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 23 मई और 3 जून 1922 को कांग्रेस के महामंत्री विट्ठलभाई पटेल को इस विषय पर पत्र लिखे लेकिन कोई संतोषजनक हल नहीं निकला। इन्हीं कारणों और नेताओं की उदासीनता के कारण दलितोद्धार का काम पूरा नहीं हो सका। इतिहास से सीख लेकर वर्तमान में हमें सामाजिक तौर पर दलितोद्धार का कार्यक्रम सामाजिक समरसता के रूप में चलाना पड़ेगा। केवल कानून बना देने से इस उद्देश्य की प्राप्ति संभव नहीं है। अपितु इसका कठोरता से पालन सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करना होगा। इसके लिए आर्यसमाज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् आदि इस विषय पर समान विचारधारा वाली सामाजिक संस्थाओं को अब दलितोद्धार का कार्य वहीं से प्रारम्भ करना पड़ेगा जहां स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के बाद बन्द हुआ था। जनता को इस बारे जागरूक करना पड़ेगा और स्वार्थी सत्ता लोलुप नेताओं को जनता के सामने बेनकाब करना पड़ेगा। इसके लिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सरकार को भी इन सामाजिक संस्थाओं का सहयोग करना पड़ेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द : एक अनुपम.... पृष्ठ 3 का शेष....

देखने में आता है। जो मनुष्य ऐसा ही स्वभाव रखता है उसको भी इन्हीं जातियों में गिनना उचित है। परन्तु जो निर्बलों पर दया, उनका उपकार और निर्बलों को पीड़ा देने वाले अधर्मी बलवानों से किंचिन्मात्र भी भय शंका न करके, इनको परपीड़ा से हटाके निर्बलों की रक्षा तन, मन और धन से सदा करना है, वही मनुष्य जाति का निज गुण है। क्योंकि जो बुरे कामों के करने में भय और सत्य कामों के करने में किंचित् भय शंका नहीं करते वे ही मनुष्य धन्यवाद के पात्र कहाते हैं।'

ऋषि दयानन्द के वचनों के अनुसार श्रद्धानन्द ने अपना जीवन एक सच्चे मनुष्य की भांति जीया। उनकी शारीरिक भव्यता और मानसिक दृढ़ता उन्हें विश्व के महापुरुषों में बहुत ऊँचे स्थान पर प्रतिष्ठित कर देती है। शारीरिक भव्यता के बारे में रेम्जे मैक्डानल्ड (ब्रिटिश प्रधानमंत्री) के विचार उल्लेखनीय हैं।- 'यदि इस युग का कोई कलाकार ईसा मसीह का चित्र बनाने के लिए अपने सामने कोई माडल रखना चाहे, तो मैं उसे महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के भव्य व्यक्तित्त्व की ओर संकेत करूँगा।' निर्भीकता और दृढ़ता उनके व्यक्तित्त्व की सहचरी थी।

23 दिसम्बर 1926 को रोगशैया पर विश्राम करते हुए दिल्ली में अब्दुल रशीद नामक एक मतान्ध युवक ने स्वामी जी की कायरतापूर्ण तरीके से हत्या कर दी। सारा देश स्तब्ध रह गया। गांधी जी ने उनके बलिदान पर लिखा- 'स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे सुधारक थे जो वाक्शूर नहीं, कर्मवीर थे। उनका विश्वास जीवित जाग्रत था। इसके लिए उन्होंने अनेक कष्ट उठाए थे। वे वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग शैया पर नहीं किन्तु रणांगण में मरना पसंद करते हैं। मुझे उनसे तथा उनके अनुयायियों से ईर्ष्या होती है। उनका कुल तथा उनका देश उनकी इस शानदार मृत्यु पर बधाई के पात्र हैं। वे वीर के समान जीये और वीर के समान ही मरे।'

यदि किसी को श्रद्धा की व्याख्या समझनी हो तो वह श्रद्धानन्द के जीवन का अध्ययन करे। जैसे दयानन्द के मिलन ने उनका कायापलट कर दिया, वैसे ही श्रद्धानन्द के जीवन को समझने से भी कितने ही आत्मविमुग्ध लोगों का कायापलट हो सकता है।

आर्य जाति! तूने अपने हितैषियों को भुला दिया है। तूने तुम्हारे लिए सर्वस्व बलिदान करने वाले हुतात्माओं और उनके बताए मार्ग की अवहेलना कर दी। इसीलिए तेरी यह दुर्दशा हो रही है कि तू अपने स्वतंत्र देश में भी अपने इतिहास, अपनी संस्कृति की रक्षा नहीं कर पा रही। यदि अब भी तू न जागी तो इतिहास में कोई तेरा नाम लेने वाला भी न रहेगा। वक्त की फिक्र कर नादां मुसीबत आने वाली है,

तेरी बरबादियों के मशविरे हैं आसमानों में। न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दुस्तां वालो! तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में।।

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्र में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द जी को.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

राष्ट्रीय नेता की कोटि के नेता बन गये थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मलकाने राजपूत जिनके सभी रीति रिवाज व पूजा पद्धतियां आदि हिन्दू व हिन्दुओं के समान थीं, मुसलमान कहलाते थे। वह मुस्लिम मलकाने राजपूत चाहते थे उनको उनके पूर्वजों के धर्म हिन्दुओं में शामिल कर लिया जाये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था और भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना कर लगभग 2 लाख की संख्या में मलकाने राजपूतों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया था। उनका यह कार्य भी इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। यह शुद्धि ही वस्तुतः वेदप्रचार आन्दोलन है जिसका एक उद्देश्य भय व प्रलोभन आदि अनेक कारणों से अतीत में धर्मान्तरित अपने बिछुड़े भाइयों को ईश्वरीय ज्ञान वेद की शरण में लाया जाना है। आर्य जाति इस कार्य के महत्व को जानकर इसका अनुसरण करेगी तो इतिहास में जीवित रहेगी अन्यथा इसकी इतिहास में पूर्व जो अवस्था हुई है, भविष्य में उससे भी बुरी हो सकती है। हम यह भी बता दें कि आर्यसमाज का वेद प्रचार और शुद्धि का आन्दोलन सत्य को ग्रहण करने और असत्य के त्याग करने के सिद्धान्त पर आधारित है। आर्यसमाज सभी मतावलम्बियों की धर्म विषयक जिज्ञासाओं की सन्तुष्टि करता है जबकि अन्य ऐसा नहीं करते। मनुष्य जाति की उन्नति का एकमात्र कारण सत्य का प्रचार ही है, अतः आर्यसमाज को सत्य ज्ञान के भण्डार वेदों का संगठित होकर पुरजोर प्रचार करना चाहिये।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितोत्थान का कार्य भी प्रभावशाली रूप से किया। कांग्रेस में रहते हुए उन्होंने अनुभव किया कि उनके इस कार्य में कांग्रेस द्वारा वह प्राथमिकता व सहयोग नहीं मिल रहा है जिसकी उन्हें अपेक्षा व आवश्यकता थी, तो उन्होंने अपना रास्ता बदलते हुए कांग्रेस छोड़ दी। इतिहास में यह भी पढ़ने को मिलता है पंजाब में किसी स्थान पर सवर्ण हिन्दू अपने कुओं से दलितों को पानी नहीं भरने देते थे। ऐसे स्थानों पर स्वामी श्रद्धानन्द और उनके आर्यसमाजी अनुयायी स्वयं पानी भरकर दलित भाइयों के घर पहुंचाते थे। हम अनुभव करते हैं कि आर्यसमाज व इसके नेताओं ने समाज के उपेक्षित व दलित वर्ग को दलित नाम दिया और उनके उत्थान के लिए दलितोत्थान का आन्दोलन चलाया। कांग्रेस ने इन्हें दलित बन्धुओं को एससी व एसटी आदि बनाकर सुविधाभोगी बना दिया जिससे वह समाज में घुलने मिलने के स्थान पर स्वयं को पृथक्-सा अनुभव करने लगे। आर्यसमाज दलितों का वैदिक शिक्षा द्वारा उत्थान कर उसका समग्र हिन्दू समाज में गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार समावेश करना चाहता था जबकि राजनीतिक दलों ने उन्हें सुविधा देकर उन्हें अपना वोट बैंक बना लिया जिससे दलितोत्थान का कार्य अवरुद्ध हो गया। हमारे सामने ऐसे उदाहरण हैं कि कुछ दलित परिवारों के बन्धु गुरुकुलों में पढ़कर वेदों के विद्वान बने, वेदों पर टीकायें आदि लिखी, मांस-मदिरा का सेवन त्यागा, स्वास्थ्यप्रद घी-दुग्ध आदि का भोजन किया, आर्यसमाज में हिन्दुओं के घरों में पूजा-पाठ कराने वाले सम्मानित पुरोहित बनें और समाज में सम्मानित स्थान पाया जबकि आर्यसमाज से पृथक् दलित सामाजिक दृष्टि से वह स्थान प्राप्त नहीं कर सके।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सद्धर्म प्रचारक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन भी किया था। ऋषि दयानन्द के हिन्दी को महत्व दिये जाने के कारण आपने, पंजाब में उर्दू पाठकों की बहुसंख्या होने पर भी, अपने पत्र को उर्दू से हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। इससे उन्हें भारी आर्थिक घाटा भी हुआ था परन्तु धर्म को महत्व देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिए आर्थिक घाटे का महत्व तभी था जब कि सिद्धान्त के विपरीत न हो। स्वामी जी आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहे। ऋषि दयानन्द जी का खोजपूर्ण जीवन चरित लिखाने का श्रेय भी आपको है। ऋषि जीवन के अनुसंधानकर्ता और लेखक पं. लेखराम जी आपके गहरे मित्र व सहयोगी थे। दोनों में गहरे आत्मीय सम्बन्ध थे। आपने पं. लेखराम जी की एक मुस्लिम आततायी द्वारा हत्या के बाद उनका श्रद्धापूर्ण शब्दों में जीवन चरित्र लिखा है। यह एक वैदिक धर्म पर शहीद हुए महापुरुष का अपने से पहले धर्म की वेदी पर शहीद पं. लेखराम को श्रद्धांजलि है। इसे देश की युवा पीढ़ी को अवश्य पढ़ना चाहिये। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक बहुत अच्छे लेखक भी थे। आप अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी आदि भाषाओं के विद्वान थे। आपने हिन्दी व उर्दू में पर्याप्त संख्या में ग्रन्थ लिखे हैं। आपका समस्त साहित्य, कुछ उर्दू आदि ग्रन्थों को छोड़कर, 11 खण्डों में वैदिक साहित्य के प्रकाशक मै. विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इसका नया संस्करण इसी प्रकाशक द्वारा दो खण्डों में पुनः प्रकाशित किया गया है। स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा **'कल्याण मार्ग का पथिक'** लिखी है जो किसी उपन्यास की तरह ही लोकप्रिय है। इसमें आपने अपने जीवन की किसी भी गुप्त बात को छिपाया नहीं है। आत्मकथा साहित्य में यह बेजोड़ ग्रन्थ है। वेद भाष्यकार डॉ. आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी के सुपुत्र डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर एक भव्य ग्रन्थ **'एक विलक्षण व्यक्तित्व-स्वामी श्रद्धानन्द'** लिखा है। इस ग्रन्थ की महत्ता का अनुमान इसे पढ़कर ही लगाया जा सकता है। हर साहित्य प्रेमी को इस ग्रन्थ को पढ़ता चाहिये।

जिन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल कांगड़ी का संचालन करते थे तो वहां श्री मोहनदास गांधी भी आये थे। गांधी जी यहां आने से कुछ समय पूर्व ही दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आपको मिस्टर गांधी न कहकर महात्मा गांधी के नाम से सम्बोधित किया था। गांधी जी के नाम के साथ **'महात्मा'** शब्द का प्रथम प्रयोग स्वामी जी ने ही किया जो गांधी जी की मृत्यु तक उनके नाम के साथ जुड़ा रहा। यह बता दें कि जब गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में आन्दोलन किया था तो स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्यों ने भारत में मेहनत व मजदूरी करके व भोजन आदि व्यय में कमी करके एक अच्छी बड़ी धनराशि गांधी जी को आन्दोलन में सहायतार्थ अफ्रीका भेजी थी। एक बार इंग्लैण्ड में विपक्ष के नेता रैम्जे मैकडानल, जो बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने, गुरुकुल आये और स्वामी जी के साथ उनें निकट रहे।

आपने अपने संस्मरणों में स्वामी श्रद्धानन्द जी को जीवित ईसामसीह की उपाधि से स्मरण किया है। उन्होंने यह भी लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सेंट पीटर की मूर्ति बनाना चाहे तो मैं उसे स्वामी श्रद्धानन्द की भव्य मूर्ति को देखने की संस्तुति व संकेत करूंगा। उनके जीवन की अनेक प्रेरणाप्रद घटनायें हैं। अधिक विस्तार न कर हम लेख को विराम देते हुए जननायक आदर्श महापुरुष, ईश्वर व वेदभक्त, देशभक्त व शिक्षाशास्त्री, समाज-सुधारक और दलितोद्धारक, शुद्धि का सुदर्शन चक्र चलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी भावनायुक्त श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

196, चुक्खूवाला–2 देहरादून–248001
फोन–09412985121

स्वतंत्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास का 100वां जन्म दिवस सम्पन्न

ग्राम लाडवा जिला हिसार में दिनांक 18.12.2016 को स्वतंत्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास का 100वां जन्मदिवस समारोह विधिवत् सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री रामविलास गोयल ने की। मुख्य अतिथि गोयनका जी व मेजर करतार सिंह प्रधान प्रान्तीय संघ एवं मुख्य वक्ता डॉ. महेन्द्र सिंह जिन्होंने भगत जी की जीवनी लिखी थी, थे।

स्कूली बच्चों का प्रेरणाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। सभी वक्ताओं ने उनके जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। एक आंखों का कैम्प लगाया। इस अवसर पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही समेत 12 सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर हजारों की संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। उत्तम ऋषिलंगर की व्यवस्था भी की गई। भगत जी के सुपुत्र भगत देवराज एडवोकेट ने सबका धन्यवाद किया।

-शमशेर नम्बरदार, लाडवा (हिसार)

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल को याद किया

दिनांक 19.12.2016 को सायंकाल अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान दिवस पर सायं 4 बजे आर्य निवास नलवा जिला हिसार में यज्ञ का आयोजन किया गया। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने यज्ञ किया। पण्डित जी के जीवन व कार्यों पर प्रेरणादायक संस्मरण सुनाए और स्कूली बच्चों को उनकी जीवनी पढ़ने का सुझाव दिया।

इस अवसर पर स्कूली बच्चों के अतिरिक्त लैक्चरर राजबीर आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, सूबेसिंह दूहन, बिमला आर्या, बेटी उर्मिल, भलेराम आदि ने भाग लिया।

-पवन कुमार आर्य, नलवा (हिसार)

www.thearyasamaj.org

सोमकण हमें कर्मशील व शान्त रखते हैं

❑ डॉ० अशोक आर्य, जी. 7, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

जब हम अपने शरीर में सोमकणों को संभाल लेते हैं तो हमारा शरीर अत्यधिक क्रियाशील हो उत्तम कर्म करता है । हमारा मन सदा शान्त रहता है । शान्त मन वाले होने से हम प्रकृष्ट चेतना वाले बनते हैं। इस बात की ओर ही यह मन्त्र संकेत करते हुए कह रहा है कि **आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः। शं ते सन्तु प्रचेतसे॥** ऋग्वेद 1.5.7॥ इस मन्त्र में चार बातों पर प्रकाश डालते हुए मन्त्र उपदेश कर रहा है कि 1. सोमकण शरीर में सत्ता स्थापित करें हे इन्द्रिय विजेता जितेन्द्रिय पुरुष!, हे आसुरी प्रवृतियों का संहार, नाश करने वाले जीव! यहां पर जितेन्द्रिय तथा आसुरी प्रवृतियों को नष्ट करने वाला शब्द का सम्बोधन करते हुए जीव को पुकारा गया है। जितेन्द्रिय कौन होता है? जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो अर्थात् जो व्यक्ति सोमकणों की रक्षा कर इन्द्रिय संयम में सक्षम हो गया हो, वह व्यक्ति ही जितेन्द्रिय कहलाता है। दूसरी बात जो कही गयी है, वह है आसुरी प्रवृतियों के संहार करने वाले पुरुष।

अशोक आर्य

अब प्रश्न उठता है कि आसुरी प्रवृतियों का संहारक कौन है? यहां भी उपर वाली बात ही आती है। मानव शरीर में काम, क्रोध आदि अनेक प्रकार की आसुरी प्रवृतियां होती हैं, जो सदा उस मानव का नाश करने का यत्न करती रहती हैं किन्तु इन प्रवृतियों को वह व्यक्ति नष्ट कर देता है, जिसने सोम को अपने शरीर में व्याप्त कर इसे पवित्र बनाकर कर्मशील बन गया हो। यहां भी सोम की ही उपयोगिता का वर्णन है। अत: मानव जीवन में सोमकण के महत्व को ही प्रतिष्ठित किया गया है । अत: मन्त्र कह रहा है कि हे पुरुष तुझे जितेन्द्रिय बनाने के लिए तथा तुम्हें आसुरी प्रवृतियों से बचाने के लिए यह सोमकण तुझमें सदा तथा सामान्य रूप से प्रवेश करें। यह सोमकण तेरे शरीर में केवल प्रवेश ही न करे, बल्कि तेरे शरीर में सब ओर फैलकर अपनी शक्ति की सत्ता स्थापित करे ताकि 2. सोमरक्षक कभी आलसी नहीं बनाता। इन सोम कणों के कारण तूं सदा कर्मशील बन कोई न कोई कर्म अथवा कार्य करता रहे । कभी निठल्ला न रहे। जब यह सोम तेरे शरीर में रक्षित हो जाता है तो तुझे कभी अकर्मण्यता आकर नहीं घेर सकती। तेरा मन सदा किसी न किसी कर्म में लगना, किसी कार्य मे लगे रहना ही पसन्द करता है, कभी खाली व निठल्ला नहीं रहना चाहता। यह सोम कण ही तुझे कर्मशील बनाते हैं। इससे यह तथ्य सामने आता है कि जो व्यक्ति सोम को अपने शरीर में धारण करने से सोमी बन जाता है वह सदा कर्म में लगा रहता है। इस प्रकार वह कभी आलसी तो हो ही नहीं सकता। 3. सोमज्ञान को दीप्त कर शान्ति का कारण सोमरक्षण का उद्देश्य ज्ञान को एकत्र करना होता है, क्योंकि इसकी रक्षा से बुद्धि तीव्र होकर ज्ञान का संग्रह करने में, स्वाध्याय में जुट जाती है। इस प्रकार यह सोम ज्ञान का भण्डार एकत्र करने वाला भी होता है। इस लिए यहां कहा है कि ज्ञान की वाणियों का सेवन करने वाले जीव अथवा पुरुष! यह जो सोमकण तूने अपने शरीर में एकत्र किये हैं, रक्षित किये हैं, यह तुझे शान्ति देने वाले हों, क्योंकि सोम ही मानवीय शक्तियों का कारण होते हैं तथा शक्तिसम्पन्न व्यक्ति कभी भयभीत नहीं होता। जिसमें भय नहीं है, वह ही शान्त रह सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि सोम की रक्षा का उद्देश्य बुद्धि को सम्पन्न कर मानव को शान्त बनाना ही है। स्पष्ट है कि सोम से युक्त प्राणी का शरीर सदा निरोग रहता है, उसका मन सब बुराइयों के धुल जाने के कारण निर्मल हो जाता है तथा मस्तिष्क में ज्ञान का दीप जलने लगता है जिससे उसका ज्ञान भी दीप्त हो जाता है। इससे ही यह शान्ति प्राप्त करने वाले बनेंगे ही। 4. सोमकणों से विचारवान् मानव निर्माण यह सोमकण तेरे अन्दर चेतना पैदा करने वाले हों। मानव शरीर की चेतना का कारण सोम ही तो होते हैं, जो ज्ञान को दीप्त कर उसे चेतन बनाते हैं। अत: मन्त्र कहता है कि यह सोम तेरे लिए भरपूर चेतना देने वाले हों, चेतना को प्रकाशित करने वाले हों। इस सोम की रक्षा से तू सदा आत्म स्मरण, आत्म चिन्तन करने वाला हो। सदा अपने विषय में विचार करने वाला, चिन्तन करने वाला बनकर इस तथ्य को समझने का यत्न करता रह कि तू कौन है? तू कहां से आया है तथा तू क्यों आया है? सदा इन बातों पर विचार करता रह। कभी इन बातों को भूल न जाए क्योंकि इस चेतना को भूलने से ही तो हमारे जीवन का क्रम ऊट-पटांग-सा हो जाता है, अस्त-व्यस्त-सा हो जाता है, जीवन उलझ-सा जाता है । इस प्रकार के बिगड़े हुए क्रम के जीवन वाले होने से हमारे जीवन में प्रभु का स्थान धन ले लेता है। अब हम प्रभु चिन्तन के स्थान पर धन का चिन्तन करने लगते हैं। अब हमारा धन ही सब कुछ बन जाता है। हम धन संग्रह को ही अपना एकमात्र उद्देश्य बना लेते हैं। हम जीवन मूल्यों को ऊंचा उठाने वाले धन को भूल कर भौतिक धन के पीछे भागने लगते हैं। जहां हम इस अवसर पर भौतिक भोगों को ही धन समझने लगते हैं वहां हम योग के स्थान पर भोग प्रधान बन जाते हैं। जब हमने सोम की रक्षा करने के लिए योग का साधन अपनाना होता है, वहां हम भोग के द्वारा संकलित किए, एकत्र किये सोम का नाश करने लगते हैं, क्योंकि योग तो सोम को जोड़ने का काम करता है तथा भोग से सोम का क्रम टूट कर एकत्रण के स्थान पर टूटन पैदा करता है। सोम के संग्रह के कारण मानव का जो मन प्रेम वाला होने के कारण सब जगत के प्राणियों को अपनी ओर खैंचता था, वह मन अब भोग के कारण राग, द्वेष में फँस जाता है। इस प्रकार राग-द्वेष में फँसा मन कभी प्रेम की ओर बढ़ ही नहीं सकता। अत: इस में ईर्ष्या व द्वेष का निवास होने से यह लड़ाई झगड़ा, कलह व क्लेश का केन्द्र बन जाता है। जो व्यक्ति इस प्रकार की व्याधियों से ग्रसित होता है, वह निरन्तर अपने अन्दर के सोम का नाश करता रहता है। इस प्रकार सोम से मुक्त होने से वह शिथिल पड़ जाता है। सोम के नष्ट होने से मानव में जो नम्रता थी, वह भी नष्ट हो जाती है। इस नम्रता का स्थान अब अभिमान ले लेता है। जिस आध्यात्मिक धन से हम उस पिता से जुड़कर उसे पिता मानते थे, उसे दाता मानते थे तथा नम्र होकर उसके सान्निध्य को, उसकी निकटता को पाने का यत्न करते थे, इस भौतिक धन को पाने की लालसा ने हमारी यह सब नम्रता दूर कर दी। हम अत्यधिक भौतिक धन के स्वामी होने पर भी ओर धन एकत्र करना चाहते हैं, हमारी यह धन एकत्रण की भावना ने हमें अभिमानी बना दिया। अब हम अपने धन-ऐश्वर्य पर गर्व कर उस परमपिता परमात्मा को भूल गये। अब हम अपने को ही ईश्वर मानने लगे ओर कहने लगे कि यह धन ही है, जिससे हम कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं। हम अपरीमित, असीमित धन के स्वामी हैं। अब हम कुछ भी कर सकते हैं। ईश्वर नाम की कोई वस्तु इस संसार में नहीं है और यदि है तो वह है धन, जिसके स्वामी हम हैं। इस प्रकार हम ही ईश्वर हैं, हम ही इस संसार को चलाने वाले हैं।

इस प्रकार का अभिमान हमारे अन्दर आ जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि एक ओर तो हमारा सोम हम से दूर होता चला जाता है दूसरी ओर संसार में धनवान के अत्याचार बढ़ने लगते हैं, बढने लगते ही नहीं निरन्तर बढ़ते चले जाते हैं। इससे इस संसार में अन्याय का घर बन जाता है, यह अन्याय ही अभाव का कारण बनता है। अन्याय से ग्रसित व्यक्ति कर्म को भूल जाता है, अकर्मी के भी सोम कण नष्ट होते हैं, वह भी शिथिल हो जाता है। जब कोई कर्म करने वाला नहीं रहता तो उपभोग के लिए कुछ पैदा भी करने वाला कोई नहीं होता। इससे सब ओर अभाव ही अभाव हो जाता है और जो थोड़ा कुछ होता है, उसे यह धनवान व्यक्ति अपने भण्डारों में भर लेता है जिससे साधारण व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है। परिणाम स्वरूप जिस संसार ने स्वर्गिक आनन्द देना था वह संसार दु:खरूपा बनकर घोर नरक का चित्र पेश करता है ।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।